कथा सरिता

समझदारी किसान की...

किसी गाँव में चार मित्र रहते थे।
चारों में इतनी घनी मित्रता थी कि हर समय साथ रहते, उठते बैठते, योजनाएँ बनाते।
एक ब्राह्मण, एक ठाकुर, एक बनिया और एक नाई था। पर कभी भी चारो में जाति का भाव नहीं था, गज़ब की एकता थी। इसी एकता के चलते वे गाँव के किसानों के खेत से गन्ने चने आलू आदि चीज़ें उखाड़ कर खाते थे। एक दिन इन चारो ने किसी किसान के खेत से चने के झाड़ उखाड़े और खेत में ही बैठकर हरी हरी फलियों का स्वाद लेने लगे। खेत का मालिक किसान आया, चारो की दावत देख उसे बहुत क्रोध आया। उसका मन किया कि लट्ठ उठाकर चारो को पीटे, पर चार के आगे एक! वो स्वयं पिट जाता, सो उसने एक युक्ति सोची।

चारो के पास गया, ब्राह्मण के पाँव छुए, ठाकुर साहब की जयकार की, बनिया महाजन से राम जुहार और फिर नाई से बोला- देख भाई! ब्राह्मण देवता धरती के देव हैं, ठाकुर साहब तो सबके मालिक हैं, अन्नदाता हैं, महाजन सबको उधारी दिया करते हैं, ये तीनों तो श्रेष्ठ हैं, तो भाई इन तीनों ने चने उखाड़े सो उखाड़े पर तू! तू तो ठहरा नाई, तूने चने क्यों उखाड़े? इतना कहकर उसने नाई के दो तीन लट्ठ रसीद किये। बाकी तीनों ने कोई विरोध नहीं किया क्योंकि उनकी तो प्रशंसा हो चुकी थी।

अब किसान बनिए के पास आया और बोला- तू साहूकार होगा तो अपने घर का, तू पण्डित जी और ठाकुर साहब तो नहीं है ना! तूने चने क्यों उखाड़े? बनिये के भी दो तीन तगड़े तगड़े लट्ठ जमाए। पण्डित और ठाकुर ने कुछ नहीं कहा।

अब किसान ने ठाकुर से कहा- ठाकुर साहब! माना आप अन्नदाता हो पर किसी का अन्न छीनना तो ग़लत बात है। अरे पण्डित महाराज की बात दीगर है, उनके हिस्से जो भी चला जाये दान पुण्य हो जाता है, पर आपने तो बटमारी की! ठाकुर साहब को भी लट्ठ का प्रसाद दिया। पण्डित जी कुछ बोले नहीं, नाई और बनिया अभी तक अपनी चोट सहला रहे थे। जब ये तीनों पिट चुके तब किसान पण्डित जी के पास गया और बोला- माना आप भूदेव हैं पर इन तीनों के गुरू घण्टाल आप ही हैं, आपको छोड़ दूँ, ये तो अन्याय होगा। तो दो लट्ठ आपके भी पड़ने चाहिए।
मार खा चुके बाकी तीनों बोले हाँ हाँ, पण्डित जी को भी दण्ड मिलना चाहिए। अब क्या था, पण्डित जी भी पीटे गए।
किसान ने इस तरह चारो को अलग अलग करके पीटा। किसी ने किसी के पक्ष में कुछ नहीं कहा, उसके बाद से चारो कभी भी एक साथ नहीं देखे गये।
मित्रों, पिछली दो तीन सदियों से हम मनुष्यों के साथ यही होता आया है, कहानी सच्ची लगी हो तो समझने का प्रयास करो और अगर कहानी केवल कहानी लगी हो तो आने वाले समय के लट्ठ तैयार हैं।

भाग्य की चाभी किसके पास?

एक पान वाला था। जब भी पान खाने जाओ ऐसा लगता कि वह हमारा ही रास्ता देख रहा हो। हर विषय पर बात करने में उसे बड़ा मज़ा आता। कई बार उसे कहा कि भाई देर हो जाती है, जल्दी पान लगा दिया करो पर उसकी बात ख़त्म ही नहीं होती।
एक दिन अचानक कर्म और भाग्य पर बात शुरू हो गई। तक़दीर और तदबीर की बात सुन मैंने सोचा कि चलो आज उसकी फ़िलॉसफ़ी देख ही लेते हैं। मैंने एक सवाल उछाल दिया। मेरा सवाल था कि आदमी मेहनत से आगे बढ़ता है या भाग्य से? और उसके जवाब से मेरे दिमाग के सारे जाले ही साफ़ हो गए।
कहने लगा,आपका किसी बैंक में लॉकर तो होगा? उसकी चाभियाँ ही इस सवाल का जवाब हैं। हर लॉकर की दो चाभियाँ होती हैं। एक आपके पास होती है और एक मैनेजर के पास। आपके पास जो चाभी है वह है परिश्रम और मैनेजर के पास वाली भाग्य। जब तक दोनों नहीं लगतीं ताला नहीं खुल सकता। आप कर्मयोगी पुरुष हैं और मैनेजर भगवान। आपको अपनी चाभी भी लगाते रहना चाहिये। पता नहीं ऊपर वाला कब अपनी चाभी लगा दे। कहीं ऐसा न हो कि भगवान अपनी भाग्यवाली चाभी लगा रहा हो और हम परिश्रम वाली चाभी न लगा पायें और ताला खुलने से रह जाये ।

‡egefOeeq< j

अश्वत्थामा के सम्बन्ध में आधा झूठ बोलने के कारण दंड स्वरूप युधिष्ठिर को कुछ समय के लिए नरक ले जाया गया। वहाँ अनेक प्राणियों को दु:ख दण्ड से कराहते देखकर उनका हृदय दया से भर आया और वे साथ ले जाने वाले देवदूतों से बोल उठे - ''इन पीड़ितों की सेवा करने के लिए मैं भी नरक में ही रहूंगा।'' देवदूत: ''राजन्, ये पापी लोग हैं। इन्हें नरक भुगतना ही पड़ेगा। आप पुण्यात्मा हैं, इसलिये आपका यहां रहना संभव नहीं।'' युधिष्ठिर: '' तो इन्हें भी स्वर्ग ले चलो।''
देवदूत : ''यदि आप अपना पुण्य इन्हें दे दें तो ये स्वर्ग जा सकते हैं।'' युधिष्ठिर ने खुशी-खुशी अपना पुण्य उन दुखियों को दान कर दिया और स्वयं सदा नरक में रहना स्वीकार कर लिया। स्वर्ग के स्वामी इन्द्र उन अकेले नरक में पड़े हुए युधिष्ठिर के पास आये और कहा- ''आपने अपने पुण्य का दान कर दिया। उस दान का जो नया पुण्य आपने कमाया है उसके फलस्वरूप आप फिर स्वर्ग के अधिकारी हो गये। चलिए।'' अपने द्वारा किया गया सत्कर्म पुण्य का परिणामकारी होता है और पुण्य दान अभिष्ठ फलदायी होता है ।

भागा हाथ आया भाग्य

एक सेठ जी थे - जिनके पास काफी दौलत थी। सेठ जी ने अपनी बेटी की शादी एक बड़े घर में की थी। परन्तु बेटी के भाग्य में सुख न होने के कारण उसका पति जुआरी, शराबी निकल गया, जिससे सब धन समाप्त हो गया। बेटी की यह हालत देखकर सेठानी जी रोज़ सेठ जी से कहती कि आप दुनिया की मदद करते हो मगर अपनी बेटी परेशानी में होते हुए उसकी मदद क्यों नहीं करते हो? सेठ जी कहते कि जब उनका भाग्य उदय होगा तो अपने आप सब मदद करने को तैयार हो जायेंगे...।
एक दिन सेठ जी घर से बाहर गये थे कि, तभी उनका दामाद घर आ गया। सास ने दामाद का आदर-सत्कार किया और बेटी की मदद करने का विचार उसके मन में आया कि क्यों न मोतीचूर के लड्डूओं में अशर्फियाँ रख दी जाये... यह सोचकर सास ने लड्डूओं के बीच में अशर्फियाँ दबा कर रख दी और दामाद को टीका लगा कर विदा करते समय पाँच किलो शुद्ध देशी घी के लड्डू जिनमें अशर्फियाँ थीं, दिये...। दामाद लड्डू लेकर घर से चला, दामाद ने सोचा कि इतना वज़न कौन लेकर जाये, क्यों न यहीं मिठाई की दुकान पर बेच दिये जायें और दामाद ने वह लड्डू का पैकेट मिठाई वाले को बेच दिया और पैसे जेब में डालकर चला गया।
उधर सेठ जी बाहर से आये तो उन्होंने सोचा कि घर के लिये मिठाई की दुकान से मोतीचूर के लड्डू लेता चलूं और सेठ जी ने दुकानदार से लड्डू मांगे...मिठाई वाले ने वही लड्डू का पैकेट सेठ जी को वापिस बेच दिया। सेठ जी लड्डू लेकर घर आये। सेठानी ने जब लड्डूओं का वही पैकेट देखा तो सेठानी ने लड्डू फोड़कर देखे, अशर्फियाँ देख कर अपना माथा पीट लिया। सेठानी ने सेठ जी को दामाद के आने से लेकर जाने तक और लड्डूओं में अशर्फियाँ छिपाने की बात कह डाली... सेठ जी बोले कि भाग्यवान मैंने पहले ही समझाया था कि अभी उनका भाग्य नहीं जागा... देखा मोहरें ना तो दामाद के भाग्य में थीं और न ही मिठाई वाले के भाग्य में... इसलिये कहते हैं कि भाग्य से ज़्यादा और... समय से पहले न किसी को कुछ मिला है और ना मिलेगा! इसीलिये ईश्वर जितना दे उसी में संतोष करो... झूला जितना पीछे जाता है, उतना ही आगे आता है। एकदम बराबर। सुख और दु:ख दोनों ही जीवन में बराबर आते हैं। ज़िंदगी का झूला पीछे जाए, तो डरो मत, वह आगे भी आएगा।

बुटवल-नेपाल। 'नये युग के लिए नया कदम-शाश्वत यौगिक खेती प्रशिक्षण कार्यक्रम' का उद्घाटन करते हुए जिला कृषि विकास कार्यालय प्रमुख एवं वरिष्ठ कृषि विकास अधिकृत भोजराज सापकोटा, ब्र.कु. कमला, ब्र.कु. राजू,मा.आबू, ब्र.कु. राजेन्द्र, वन कार्यालय तामनगर के प्रमुख राम बहादुर सिवाल, जिला कृषि विकास कार्यालय रूपन्देही के बागवानी विकास अधिकृत धनश्याम चौधरी, चारपाला सामुदायिक वन उपभोक्ता समूह के पूर्व अध्यक्ष एवं समाज सेवी दुर्गा सुवेदी, भद्रकाली बचत तथा ऋण सहकारी संस्था के अध्यक्ष कृष्ण भुसाल तथा अन्य।

फतेहपुर-शोखावाटी(राज.)। महाशिवरात्रि पर आयोजित कार्यक्रम में सर्व आत्माओं के एक पिता शिव परमात्मा के बारे में बताते हुए ब्र.कु. सुनीता।

नागौर-राज.। महाशिवरात्रि पर शिव ध्वजारोहण करते हुए पुलिस अधीक्षक परिस देशमुख। साथ हैं उनके विभाग के वृत्ताधिकारी व पुलिस विभाग के अन्य स्टाफ, ब्र.कु. अनिता, ब्र.कु. बसंती तथा अन्य ब्र.कु. भाई बहनें।

दिल्ली-रोहिणी से.24। शिव जयंती पर आयोजित शिव संदेश शांति यात्रा का शुभारंभ करते हुए ब्र.कु. सत्यवीर, ब्र.कु. सरला, ब्र.कु. लीना तथा अन्य।

सरोला कलां-राज.। महाशिवरात्रि पर आयोजित कार्यक्रम में केक काटते हुए जिला प्रमुख टीना भल, जिला परिषद सदस्य आशा गौतम, ब्र.कु. नेहा, ब्र.कु. सोनिया तथा अन्य।

डालटनगंज-झारखण्ड। महाशिवरात्रि पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए बिज़नेसमैन रामराज भाई, ब्र.कु. किरण, काउंसलर किरण अग्रवाल तथा सबिता ठाकुर।